पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में थीम-आधारित शिक्षण

पारुल बत्रा दुग्गल

यह लेख पूर्व प्राथमिक कक्षाओं यानी नर्सरी, केजी-1 और केजी-2 की बुनियादी कक्षाओं में बच्चों को सिखाने-पढ़ाने की तैयारी का मक़सद क्या है और उन्हें क्या व कैसे सिखाना-पढ़ाना चाहिए आदि के बारे में हैं।

लेख में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ काम करने की एक विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की गई है, साथ ही लेखिका द्वारा इस रूपरेखा के अनुरूप बच्चों के साथ किए कार्य के विश्लेषणपरक अनुभव भी प्रस्तुत किए गए हैं। सं.

देश में चल रहे प्राइवेट स्कूलों में, आमतौर पर पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं (नर्सरी, केजी-1 व केजी-2) में बच्चों को अल्फ़ाबेट्स व फोनिक साउण्ड सिखाना शुरू कर दिया जाता है। इसके साथ ही उन्हें सीधे गिनती व अक्षर लिखना सिखाना भी शुरू कर दिया जाता है। इसमें उन्हें अक्षरों और अंकों की डॉटेड आकृतियों पर पेंसिल फेरनी होती है और कक्षा बढ़ने के साथ उन्हें स्वयं लिखने का प्रयास करना होता है। केजी-2 तक आते-आते उन्हें विभिन्न शब्द या तुकान्तवाले शब्द लिखना व पढ़ना तक सिखाया जाने लगता है। साथ ही, एक से पचास तक गिनती व हिन्दी और अँग्रेज़ी की पूरी वर्णमाला आने की अपेक्षा भी बच्चों से रहती है। उन्हें रंगों, आकारों के नाम, फूलों, पक्षियों, जानवरों, शरीर के भागों आदि के नाम ज़बरदस्ती याद कराए जाने लगते हैं। इस तरह का पाठ्यक्रम बच्चों की आयु के अनुरूप नहीं होता और इससे उनके मानसिक विकास पर विपरीत असर पड़ता है। किसी चीज़ के बारे में केवल सूचना हासिल कर लेना सीखना नहीं होता, बल्कि सीखने का अर्थ कुछ सायास अनुभवों से गुज़रकर अवधारणाओं का बनना होता है। किन्तु जो सिखाया जाता है उसमें अनुभवों का पुट नहीं होता। उन्हें जो सिखाने का प्रयास किया जाता है उसमें गिनती या वर्णमाला जैसी कई अवधारणाएँ 'अमूर्त' होती हैं। इन्हें बिना किसी सन्दर्भ के सिखाया जाता है। पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को क्या सिखाया जाना चाहिए, इसे समझने के लिए बाल विकास के चरणों की कुछ समझ चाहिए, जिससे सीखना प्राकृतिक बने। आइए, एक-दो उदाहरणों से इसे समझते हैं :

1. आगे के पृष्ठ पर चित्र 1 में दिया गया दाईं तरफ़ का एक्स-रे, सात साल और बाईं तरफ़ का एक्स रे, पाँच साल के बच्चे के हाथों को साथ-साथ दिखाता है। हम देख सकते हैं कि पाँच साल के बच्चे के हाथ में हड्डी की जगह कार्टिलेज (उपास्थि) की मात्रा ज़्यादा है, जो धीरे-धीरे हड्डी में परिवर्तित होगी। हाथ की हड्डियों का पूरी तरह विकास किशोरावस्था तक जारी रहता है, इसे मेडिकल भाषा में 'ऑसीफ़िकेशन' कहते हैं।

यानी, बच्चों के हाथों की हड्डियों व माँसपेशियों की सूक्ष्म ग्रिप पाँच साल में पेंसिल को पकड़ने के लिए तैयार हो रही होती है,

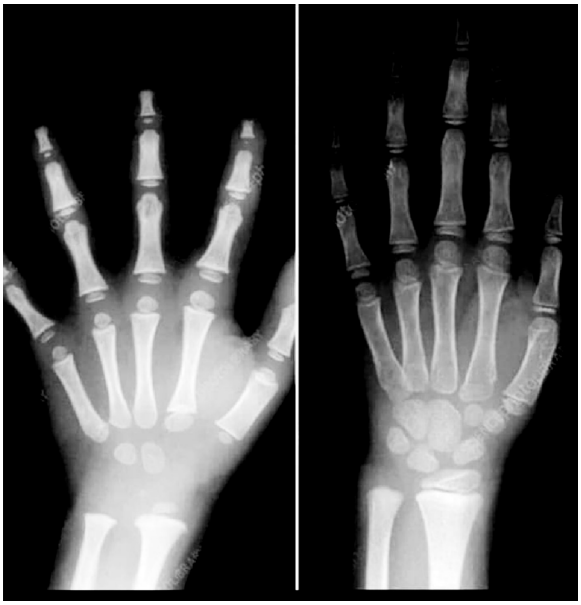

चित्र 1

इसलिए बच्चों के सही तरीक़े से न लिख पाने पर नाराज़ होना उचित नहीं है। आमतौर पर, नर्सरी व केजी कक्षाओं में बच्चे कॉपियों पर सुन्दर राइटिंग में लिखें, अक्षर ठीक से बनाएँ, इसपर ही ज़ोर होता है। लम्बे समय तक पेंसिल पकड़ने से उनकी सूक्ष्म माँसपेशियों के विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

2. इसके अलावा, पूर्व-प्राथमिक शालाओं में बच्चों को लम्बे समय तक एक ही जगह पर बेंच या कुर्सी पर बिठाकर रखा जाता है। इस वक़्त उनके शरीर की स्थूल माँसपेशियाँ भी तैयार हो रही होती हैं और उन्हें अपने काम में बारीक़ी व विशेष सन्तुलन हासिल करना सीखना होता है। इस कारण लम्बे समय तक बिना हिले-डुले कक्षा में बैठना भी छोटे बच्चों के लिए उचित नहीं होता, यह उनके प्राकृतिक स्वभाव के भी विपरीत है। वे चीज़ों को छूना और महसूस करना चाहते हैं, उनसे प्रयोग करना चाहते हैं, यह सब बैठे-बैठे सम्भव नहीं है। इसलिए छोटे बच्चों को लम्बे समय तक बिठाए रखना व हिलने-डुलने के लिए दण्ड देना अप्राकृतिक है।

छोटे बच्चों, ख़ासतौर से 3 से 6 वर्ष आयु वालों, का पाठ्यक्रम उन्हें पढ़ना-लिखना न सिखाकर 'स्कूल जाने के लिए तैयार' करे। स्कूल जाने की इस 'तैयारी' (स्कूल रेडीनेस) में उनके साथ संख्या-पूर्व अवधारणाओं और आरम्भिक साक्षरता के अभ्यास हेतु गतिविधियाँ की जाएँ। यानी, कुछ याद करवाने (मसलन, शरीर के अंगों या परिवार के सदस्यों के नाम) की जगह गतिविधियों के माध्यम से उन्हें कुछ सेंसरी (संवेदी) और मोटर (पेशीय) अनुभवों से गुज़ारना ज़रूरी है। ज़ाहिर-सी बात है कि ये गतिविधियाँ तितर-बितर तरीक़े से नहीं कराई जा सकतीं। इनके लिए कोई 'ख़ाका' (फ़्रेम) होना ज़रूरी है। पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में थीम-आधारित शिक्षण यह ख़ाका उपलब्ध करा सकता है।

थीम किसी विषय से जुड़े ज्ञान को एक 'इकाई' के रूप में बाँधने का प्रयास करती है। अपने बारे में, पेड़-पौधों, जानवर और पक्षी, फल,

चित्र 2

सब्ज़ी, हवा, पानी, वाहन, आदि जैसे विषयों के इर्द-गिर्द इन्हें व्यवस्थित किया जा सकता है। पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में थीम के विषय बच्चों के परिचित परिवेश से ही जुड़े होने चाहिए और उन्हें आयु अनुरूप कला, खेल, भाषाई व संज्ञानात्मक गतिविधियाँ करवाई जानी चाहिए। पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में हम पाठ्यक्रम को आयु अनुरूप तीन स्तरों में बाँटकर देख सकते हैं– तीन से चार वर्ष, चार से पाँच व पाँच से छह वर्ष के लिए। किस आयु वर्ग के लिए कौन-सी गतिविधियाँ करवाना उपयुक्त होगा, इसके लिए हाल ही में आए *एनसीएफ फॉर फाउंडेशनल स्टेज 2022* ने कुछ पाठ्यचर्या सम्बन्धी लक्ष्य निर्धारित किए हैं। जिसमें बाल विकास के लक्ष्य भी निर्धारित किए गए हैं। साथ ही इन लक्ष्यों से जुड़ी कुछ क्षमताएँ हैं, जिनके अनुसार आयुवार गतिविधियों की अनुशंसा की गई है।

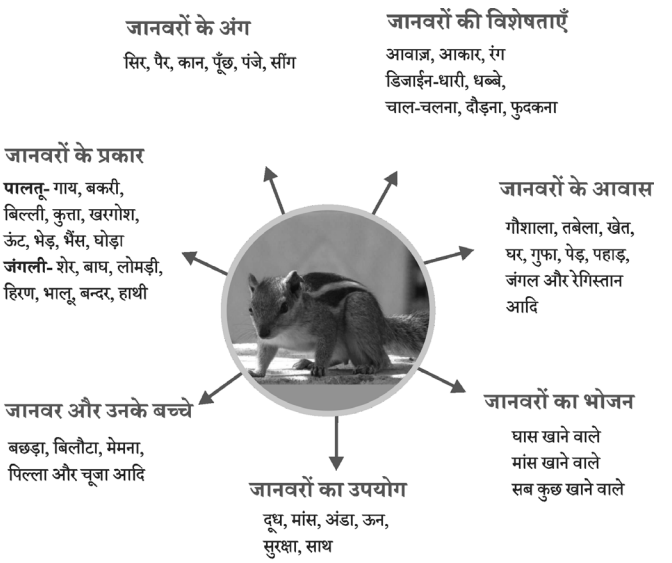

चित्र 3

यह ज़रूरी है कि प्रतिवर्ष पढ़ाने के लिए कुछ थीमों का चयन किया जाए और हर माह किन्हीं एक-दो थीम पर काम हो। हर थीम की विषयवस्तु को नियोजित किया जाए, जिससे बाल विकास के सभी आयाम या विकास क्षेत्रों (यथा– शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास, भाषाई विकास, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास और सृजनात्मक (रचनात्मक) एवं सौन्दर्यबोध के विकास हेतु गतिविधियों के अवसर हों।

प्रत्येक थीम की शुरुआत में यह स्पष्ट कर लेना चाहिए कि उस थीम से क्या-क्या अपेक्षाएँ हैं, यानी उस थीम के तहत किन मुख्य बिन्दुओं पर बात हो रही होगी। इसे 'थीम वेब' भी कहा जा सकता है। थीम वेब का एक उदाहरण ऊपर चित्र 3 में देखें।

थीम वेब का यह डिज़ाइन अलग ढंग से भी बन सकता है। यह सोचना होगा कि थीम वेब में समेटी गई सामग्री के साथ कितने दिन या अवधि में, और कितनी गहराई से बच्चों की अन्त:क्रिया तय की जाएगी। हर थीम की सम्भावनाओं का बहुत विस्तार हो सकता है, लेकिन बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए हमारे अनुसार एक थीम पर बीस से पच्चीस दिन तक कार्य किया जा सकता है। इस तरह साल भर में दस से पन्द्रह थीमों पर कार्य किया जा सकेगा। एक थीम पर काम करने की कक्षा प्रक्रिया का एक उदाहरण देखें :

मान लीजिए, आप 'जानवर' थीम पर काम करना चाहते हैं। इसके तहत, सबसे पहले जिन बिन्दुओं पर बात करनी है उनका एक कच्चा ख़ाका बना लेते हैं। इसे 'थीम वेब' का नाम दे सकते हैं। किसी शुरुआती कक्षा में आमतौर पर तीन से चार, चार से पाँच और पाँच से छह वर्ष, इन तीनों आयु समूहों के बच्चे हो सकते हैं।

आँगनवाड़ी में आमतौर पर सभी बच्चे एक साथ ही बैठते हैं। सभी बच्चों को थीम की गतिविधियों से कैसे जोड़े रखेंगे और आयु स्तर अनुसार किस तरह गतिविधियों में फ़र्क़ लाएँगे, इसका भी एक ख़ाका होना चाहिए। बीस दिन की थीम के लिए हर एक या दो दिन की शिक्षण प्रक्रिया में क्या-क्या हो रहा होगा, इसे विस्तार से लिख लेना भी मददगार होगा।

उदाहरण के लिए, नीचे दी गई तालिका को देखें। इसमें दस दिनों की समय सारणी दी गई है। जिसमें बाएँ से दाएँ थीम की अवधारणाओं पर बातचीत, संज्ञानात्मक कौशल, कहानी व गीत संगीत, आरम्भिक साक्षरता, कला गतिविधियाँ और मैदानी खेल कराने का ख़ाका दिया गया है।

दिनों का विवरण	थीम की अवधारणाओं पर बातचीत	संज्ञानात्मक कौशल	कहानी, रोल प्ले, गीत, संगीत	संवाद और आरंभिक साक्षरता का विकास	कला गतिविधियाँ	मैदानी खेल
पहला और दूसरा दिन	हमारे आस-पास दिखने वाले और जंगल के जानवरों के बारे में चर्चा	मिलान करना (चित्र)	कहानी- लोमड़ी और कौआ कविता - मैं तो सो रही थी	चित्र देखकर नाम बताओ	जानवर के चित्र में रंग भरना	जानवरों की चाल चलना
तीसरा और चौथा दिन	पालतू और जंगली जानवरों के नाम और भोजन पर चर्चा	पैटर्न बनाना	कहानी और कविता पर अभिनय	कहानी पर चर्चा और क्रम पहचान	जानवरों के चित्र बनाना	जानवरों की नकल
पाँचवाँ और छठा दिन	विभिन्न जानवरों की आवाज़ों पर चर्चा करना	वर्गीकरण	कहानी और कविता पर चर्चा	मौखिक पैटर्न पहचान	जानवरों के चेहरे बनाना	जानवरों की आवाजें निकालना
सातवाँ और आठवाँ दिन	जानवरों के शरीर के हिस्सों पर चर्चा- पैर, सिर, पूँछ, कान, सींग, पंजे, आदि	सही क्रम की पहचान	समूह गान और नृत्य	ध्वन्यात्मक शब्द पहचान	जानवरों के सींग बनाना	मन से कोई भी खेल खेलना
नौवाँ और दसवाँ दिन	जानवरों की विशेषताओं पर चर्चा करना	मिलान करना (रंग व अंगों के आधार पर)	मन से कहानी/कविता सुनाना	बेमेल शब्द या चित्र छाँटना	हथेली से चित्र	आड़ी-तिरछी रेखाएँ बनाना

ऊपर दी गई तालिका में दिखाई गई गतिविधियों के अनुसार, यह ध्यान रखना होगा कि बच्चों को बाल विकास के क्षेत्र में काम करने का मौक़ा मिल सके। बच्चों की दिनचर्या की योजना इस तालिका अनुसार बनाई जा सकती है और गतिविधियों के बीच उन्हें खेलने या पर्याप्त आराम करने और ब्रेक लेने के अवसर दिए जा सकते हैं।

इन सभी आयु समूहों के बच्चों के साथ काम में मैंने महसूस किया कि तीन-चार साल के बच्चे एक साथ दस मिनट से ज़्यादा कोई कार्य नहीं कर पाते। उनके लिए चर्चा, कविता-कहानी और छोटी खेल गतिविधियाँ उपयुक्त हैं।

'जानवर' थीम पर एक आँगनवाड़ी में काम के अपने कुछ अनुभव मैं साझा कर रही हूँ...

पहला और दूसरा दिन

जब मैं आँगनवाड़ी पहुँची तो कार्यकर्ता बच्चों की लम्बाई और वज़न माप रही थीं। आपसी परिचय के दौर के बाद बच्चों को दो समूहों में बैठाया– 3 से 4 वर्ष के बच्चे एक तरफ़ और 5 से 6 तक के दूसरी तरफ़। कुछ बड़े बच्चे अपने भाई-बहनों को सँभालने के लिए और दो रोने वाली लड़कियों की दादी और मम्मी भी कक्षा में साथ बैठी थीं। एक-दो बच्चे रो रहे थे क्योंकि उन्हें सिर्फ़ खिलौनों से खेलना था। ख़ैर, किसी तरह हमारी कक्षा तैयार हुई!

चर्चा : बात शुरू हुई कि उन्हें घर में, घर के आसपास या बस्ती में कौन-कौन से जानवर दिखते हैं। सबसे पहले शेर और फिर हाथी का नाम आया। मैंने पूछा कि शेर कॉलोनी में दिखता है क्या? कुछ जवाब ही 'नहीं' में आए। फिर कुत्ता, बिल्ली, बकरी आदि के नाम आए। जल्द ही गधा, घोड़ा और गाय जैसे नाम आए। एक-दो बच्चों ने ऊँट का नाम भी लिया लेकिन कई बच्चे ऊँट नहीं जानते थे। ज़ैद ने कहा कि उसने हाथी का बच्चा घर में पाल रखा है। कई बच्चों ने बताया कि उनके घर में काँच के बर्तन में मछलियाँ भी हैं। इसी तरह तोता या मुर्ग़ियाँ और बकरियाँ भी कुछ घरों में पलती हैं। इस बात पर चर्चा हुई कि घर के आसपास शेर या भेड़िया जैसे जानवर क्यों नहीं दिखते, वे कहाँ रहते होंगे? आगे चार्ट के द्वारा पालतू और

जंगली जानवरों के नामों पर चर्चा हुई। चर्चा के अन्त तक बच्चे कुछ सतही समझ बना पाए कि जंगली जानवर जंगल में और पालतू हमारे आसपास रहते हैं। मैंने सोचा कि इस बातचीत को दोहराते रहना होगा।

चित्र 4

मिलान करना : इस अभ्यास के लिए जानवरों के चित्र कार्डों की कई प्रतियाँ चाहिए थीं। पहले चित्र कार्ड दिखाकर बच्चों से एक-एक जानवर का हिन्दी और अँग्रेज़ी दोनों भाषाओं में नाम पूछा। इसके बाद की गतिविधि में, जानवर के आधे हिस्से के चित्र को उसके बाक़ी आधे हिस्से के चित्र से मिलाना था। इसके लिए जानवर के चित्र के प्रिंट आउट को दो हिस्सों में काट दिया गया और इन्हें आपस में मिक्स कर बच्चों को हिस्से मिलाने के लिए दे दिए। अर्थात, शेर के दोनों हिस्से मिलाना आदि। कुछ बच्चे स्वयं कर पा रहे थे तो कुछ ने अपने आजू-बाजू वाले साथी को देखकर किया। इसके बाद किस जानवर के कार्ड को मिलाया है उसपर बात हुई।

चित्र 5

चित्र देखकर नाम बताओ : यह गतिविधि 3 से 4 वर्ष आयु समूह के साथ अलग और बाक़ी बच्चों के साथ अलग की गई। 3 से 4 वर्ष की उम्र के बच्चों को चित्र देखकर जानवर का नाम बताना था और बड़े बच्चों को नाम के साथ एक वाक्य उस जानवर के बारे में बोलना था। कई बच्चे जानवरों की आवाज़ निकालने में झिझक रहे थे। जानवर के बारे में एक वाक्य का अर्थ समझने में उनको थोड़ा समय लगा। बड़े बच्चों ने बहुत वाक्य बताए, जैसे– 'कुत्ता झूमकर काट लेता है', 'कुत्ता माँस भी खाता है और दूध-रोटी भी', आदि। भेड़ ज़्यादातर बच्चों के अनुभव में नहीं थी, अतः कम बच्चे ही कुछ बता पाए। इसी प्रकार, गधा भी कम बच्चे जानते थे इसलिए उसके बारे में कुछ बड़े बच्चे ही बता पाए।

मन से चित्र : ज़्यादातर बच्चों ने कहा, "हमें चित्र बनाना नहीं आता या फिर क्या हम घर पर बना सकते हैं।" थीम-आधारित चित्र बनाने का भी पहला अनुभव था। बहुत-से बच्चों ने अल्फ़ाबेट्स या कुछ और चीज़ें बनाईं, कुछ ने पेज ख़ाली छोड़े, कुछ ने पक्षी बनाए, लेकिन जानवर कम ही बच्चों ने बनाए। एक-एक बच्चे से बातचीत हुई कि क्या बनाया है और चित्र के साथ क्या बनाया है, और उनका नाम व उम्र लिखी।

कहानी-कविता : 'मैं तो सो रही थी' कविता मज़े के साथ गाई। 'लोमड़ी और कौवा' कहानी में अधिक रुचि नहीं बनी। इसमें छोटे बच्चे ध्यान नहीं दे रहे थे। इसका कारण कहानी सुनने का अभ्यास न होना भी हो सकता है।

मेरी चाल कैसी : इस गतिविधि में बच्चों को बाहर खुले मैदान में अलग-अलग जानवरों जैसे चलने का अभिनय करना था। बच्चों ने काफ़ी मज़ा लिया। बड़े बच्चे जल्दी समझे और आसानी से कर पाए। 3-4 वर्ष वाले बच्चे आँगनवाड़ी कार्यकर्ता को देखकर अभिनय कर रहे थे और जिन जानवरों का अभिनय कार्यकर्ता ने किया, उन्होंने उनकी ही नक़ल की।

तीसरा और चौथा दिन

चर्चा : कौन, क्या खाता है, यह समझने में बच्चों को समय लगा। मसलन, शाकाहारी और माँसाहारी, यानी कुछ जानवर सिर्फ़ माँस खाते हैं, कुछ सिर्फ़ घास, और कुछ सबकुछ, यह समझना। जंगली जानवरों के बारे में अनुभव न होने पर वे सुनी-सुनाई बातें बोल रहे थे, जैसे– भालू और शेर इंसान को खा जाते हैं आदि।

पैटर्न पहचानना : बच्चों को तीन जानवरों की खाल के पैटर्न वाले कार्ड बाँटे गए– शेर, ज़ेबरा

चित्र 6

व जिराफ़। पहले उस जानवर के चित्र के साथ उसकी खाल का कार्ड रखकर बताया गया कि यह शेर है और यह उसकी खाल का कार्ड। इसी तरह, ज़ेबरा और जिराफ़ के साथ उनकी खाल का पैटर्न रखकर बातचीत हुई कि ज़ेबरा, जिराफ़ आदि जानवरों की खाल कैसी है। फिर बच्चों को गोल घेरे में कार्ड मिक्स करके बाँटे। उन्हें उस जानवर की खाल वाला कार्ड उठाना था जिसका नाम बताया जाए। तीन-चार बार के बाद छोटे बच्चों को भी समझ आ गया, जबकि पहले वे कोई भी कार्ड उठा रहे थे। बच्चे बीच-बीच में मज़ाक़ भी करने लगे थे। चाहे किसी भी जानवर का नाम लो, वे सारे कार्ड उठा रहे थे। इस प्रक्रिया को कई बार करने के बाद बच्चे इसे समझकर बता पाए।

कहानी पर चर्चा और क्रम पहचान : अलग-अलग बात करने पर काफ़ी बच्चे बता पा रहे थे कि कहानी में क्या हुआ, पर समूह में पूछने पर बिलकुल नहीं।

कला : बच्चों ने अपने मन से किसी भी जानवर का चित्र बनाया।

पाँचवाँ और छठा दिन

जानवरों के शरीर के हिस्सों पर चर्चा : यह गतिविधि पोस्टर और कार्डों के साथ की गई। मैंने हाथों से अपने सिर पर सींग और बाँह से पूँछ लगाने का अभिनय भी किया। फिर बच्चों ने भी कान, पूँछ, सींग लगाने का अभिनय किया। यह बातचीत हुई कि किन जानवरों के सींग होते हैं और किनके नहीं। इस आधार पर मोटा वर्गीकरण भी किया, जैसे बिना सींग वाले जानवर– कुत्ता, बिल्ली, गधा, सींग वाले जानवर– गाय, भैंस और बकरी आदि।

समूह गान और नृत्य : स्पीकर से बहुत-सी कविताएँ और गाने, जैसे– 'आलू कचालू बेटा', 'नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए', 'बाला बाला' आदि, सुनाए गए। इनपर बच्चों ने मज़े से डांस किया।

ध्वन्यात्मक शब्द पहचान : म्याऊँ-म्याऊँ, भों-भों, काँव-काँव, आदि जैसे कविता में आए ध्वन्यात्मक शब्दों को दोहराया गया। 5-6 वर्ष की आयु वाले समूह के साथ ऐसे शब्द भी बनाए जो कविता का हिस्सा नहीं थे, मसलन, खों-खों, खुर-खुर, मू-मू, आदि।

जानवरों के सींग बनाना : 3-4 वर्ष वाले छोटे बच्चों से सींग वाले जानवरों के कार्ड के ऊपर टहनियों के छोटे टुकड़ों के सींग लगवाए और 4-6 वर्ष के बच्चों ने अपने मन से सींग

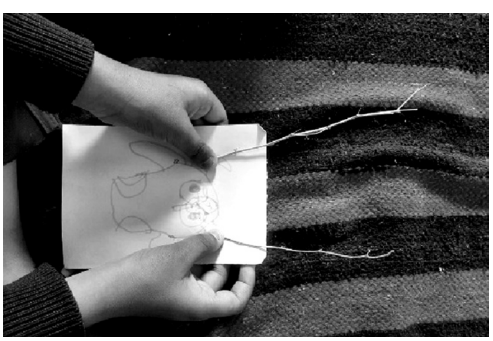

चित्र 7

वाले जानवरों के चित्र बनाए। चित्र बनाने में मदद करने और ब्लैकबोर्ड पर सरल आकृति से चेहरा बनाकर दिखाने के बावजूद बड़े बच्चों में से कुछ ही जानवरों के चेहरे बना पा रहे थे। शायद ऐसे कई अभ्यास कई बार करने होंगे!

इस अन्त:क्रिया के छह दिनों में समझ आया कि शहरी झुग्गी-बस्तियों में बाड़े या आँगन की अवधारणा नहीं होती, उसे गाँव के बच्चे अच्छे-से समझ पाते हैं। इसलिए ग्रामीण और शहरी सन्दर्भ को ध्यान में रखकर बात करना उपयुक्त होगा। सब जंगली जानवर जंगल में रहते हैं यह तो बच्चों को समझ आ गया, लेकिन पालतू जानवर अलग-अलग तरह से रह सकते हैं, कोई आँगन में, कोई घर के अन्दर, कोई पिंजरे में, तो कोई एक्वेरियम में। जिन बच्चों को पालतू जानवरों का कोई अनुभव नहीं था उनके लिए इस चर्चा की कई बातें नई थीं।

सातवाँ और आठवाँ दिन

चर्चा : सवाल था– कौन-से जानवर पानी में रहते हैं?

पानी में रहने वाले जानवरों के बारे में बच्चों ने ख़ुद ही मछली, मेंढक, मगरमच्छ, आदि नाम बताए।

वर्गीकरण : इसके बाद कार्ड के साथ ज़मीन पर और पानी में रहने वाले जानवरों पर चर्चा हुई। चार-चार बच्चों के समूह बनाकर हर समूह को मिक्स कार्ड दिए गए। उन्हें पानी में और ज़मीन पर रहने वाले जानवरों के कार्ड को छाँटना था। हर बच्चे को उसकी बारी मिली।

चित्र 8

कहानी : बच्चे कहानी सुनने के कुछ अभ्यस्त हो चुके थे और इस छोटी कहानी को अपने शब्दों में भी सुना पा रहे थे।

अन्त्याक्षरी : आज, 3-4 वर्ष के आयु समूह को छोड़कर, वैष्णवी और लव की दो टीमें बनाई गईं। ब्लैकबोर्ड पर टीमों के नाम लिखे गए। लव गतिविधियों में हिस्सा ले, इसलिए उसके नाम से टीम बनी। बच्चों को शुरू में टीम का मतलब समझ नहीं आया। वे काफ़ी देर तक 'मैं बताऊँगा', 'मैं बताऊँगा' ही करते रहे। बच्चों के पास जब नाम ख़त्म हो गए तब वे चार्टों में से जानवरों के नाम देखकर बताने लगे। इस गतिविधि में हर बच्चे ने प्रतिभाग किया, लेकिन कुछ बच्चों को काफ़ी प्राम्प्ट करना पड़ा।

अख़बार से कोलाज बनवाना : हाथी की आउटलाइन पर पेपर कोलाज बनवाने का कार्य करवाया। यह कार्य 4-4 बच्चों के समूह में

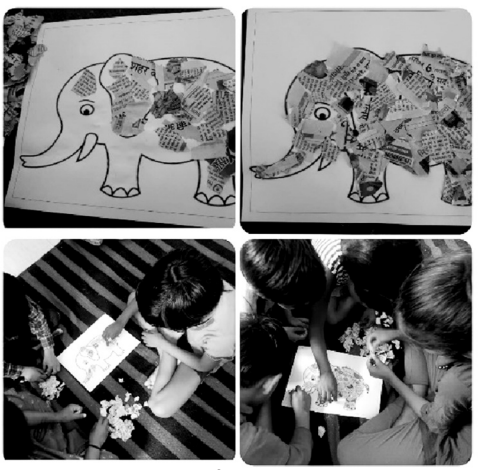

चित्र 9

करवाया गया। आज 3-4 वर्ष वाले बच्चे भी शामिल होना चाहते थे, अतः हर समूह में एक बड़ा और तीन छोटे बच्चे थे। पेपर पर ग्लू लगाकर दिया और पेपर चिन्दी करके दिए। बच्चों को इन्हें चिपकाना था, जो वे समूह में अच्छे-से कर पाए।

नौवाँ और दसवाँ दिन

कौन, क्या खाता है : शाकाहारी और माँसाहारी की जगह माँस खाने वाले और घास खाने वाले शब्दों का प्रयोग किया गया। लेकिन शुरू में बच्चे घास खाने वाले जानवरों को नहीं समझे क्योंकि वे ये जानते थे कि ख़रगोश गाजर, भालू शहद और बन्दर केला खाते हैं। यह समझने में समय लगा कि भालू सर्वभक्षी होता है, और वह फल-फूल, सब्ज़ियाँ, मछलियाँ, शहद, आदि सब खाता है। इसी तरह बन्दर और सूअर भी सबकुछ खाते हैं। इसपर भी बात हुई कि क्या कुत्ता और बिल्ली दूध-रोटी ही खाते हैं या कुछ और भी।

याद रखना : बच्चों को चार जानवरों के कार्ड दिखाकर हरेक का नाम पूछा। फिर बच्चे की आँख बन्द करवाने के बाद एक कार्ड उठा लिया गया। आँख खोलने के बाद बच्चे को बताना था कि किस जानवर का कार्ड गायब है? यह कार्य सभी बड़े बच्चे कर पाए।

'ऊँट चला' कविता, गाना और कहानी पर चर्चा : इसे सभी बच्चे आराम से गा पाए और दो-तीन बार में यह याद हो गई। शेर की दावत के सन्दर्भ में पूछा गया कि हाथी के अलावा कौन-कौन नाराज़ हुआ होगा, और उन्हें कैसे मनाया गया होगा? ज़्यादा प्रतिक्रियाएँ नहीं आईं तो पूछा कि कुत्ता (या ऐसे ही कोई अन्य जानवर) नाराज़ होगा तो क्या खिलाएँगे? बच्चे हर जानवर के लिए 'केला खिलाकर मनाएँगे' ही कह रहे थे। ऐसा शायद इसलिए क्योंकि कहानी में हाथी को केला खिलाकर मनाने का ज़िक्र है। कुत्ता भी केला खाएगा क्या, हिरण और चीता भी केला खाएँगे क्या, यह पूछने पर कुछ बड़े बच्चों ने कहा कि कुत्ते को दूध-रोटी खिला सकते हैं। हालाँकि, काफ़ी बच्चे सिर्फ़ फलों के नाम पर ही अटके रहे। वे शायद यही सोच रहे थे कि सिर्फ़ फल खिलाकर ही मनाना है। आगे बात हुई तो हिरण को घास और चीते को माँस खिलाने जैसे उदाहरण भी आए।

शेर की दावत पर अभिनय : कहानी अब अच्छे से याद थी, अतः पात्रों पर चर्चा की गई। शेर, हाथी और बन्दर का अभिनय करने के लिए तीन बच्चे आमंत्रित किए गए, बाक़ी दावत के मेहमान बनेंगे। स्क्रिप्ट छोटी बनाई गई। शेर को कहना था, "मेरे घर सबको दावत पर आना है।" इसके बाद कक्षा दावत में खाना खाने का अभिनय करेगी। तभी हाथी बना बच्चा रोते हुए आएगा और कहेगा, "शेर, तुमने मुझे पार्टी में क्यों नहीं बुलाया।" फिर बन्दरिया बनी बच्ची कहेगी, "मेरे पास एक उपाय है। हाथी को केला खिलाओ।" वह प्लास्टिक का केला शेर को देगी और शेर उसे हाथी को देगा। फिर केला खाकर हाथी दावत में शामिल हो जाएगा। कहानी के अभिनय में तीन बच्चों को सबके सामने आना था और अपने संवाद बोलने थे। अगर कहानी याद हो, और बच्चों से उसपर बात की गई हो तो छोटे बच्चे भी कहानी पर आराम से अभिनय कर पाते हैं।

हथेली से चित्र बनाना : हथेली से चित्र बनाने में केवल बड़े बच्चे ही उसे जानवर का रूप दे सके, छोटे बच्चों के लिए छापे लगाना पर्याप्त था।

चित्र 10

किसकी चाल कैसी : इसमें बच्चों को मेंढक की तरह कूदने, हाथी की तरह झूमकर चलने, और बकरी की तरह इधर-उधर दौड़ने को कहा गया।

तक़रीबन एक माह तक प्रतिदिन लगभग कुछ इसी तरह जानवर थीम वेब के अन्तर्गत

चुने सभी बिन्दुओं पर काम हुआ। यह ध्यान रखा गया कि अन्य थीमों से किन संज्ञानात्मक कौशलों का विकास किया जा रहा है। सभी थीमों के अन्तर्गत सभी कौशलों की साल भर की सूची बनाई जा सकती है। इस तरह, पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं के लिए साल भर का पाठ्यक्रम बनाया जा सकता है। एक थीम की समाप्ति के बाद एक-एक बच्चे से व्यक्तिगत तौर पर थीम से जुड़े कुछ बिन्दुओं को लेकर बातचीत करके समझा जा सकता है कि बच्चा थीम को कितना समझ पाया। क्या बच्चा थीम से जुड़ी कोई कविता-कहानी, मसलन, 'मैं तो सो रही थी', 'लोमड़ी और कौवा', 'शेर की दावत', अपने शब्दों में सुना पाता है? क्या वह थीम में आई मुख्य अवधारणाओं, जैसे– पालतू-जंगली, पानी में रहने वाले जानवरों, आदि के नाम बता पाता है? आदि। यहाँ उद्देश्य बच्चे को सायास कुछ याद करवाने का नहीं है। उद्देश्य यह देखना है कि अगर उसने रुचिपूर्वक सहभागिता की है तो वह उस थीम में बारे में अपने मन में एक छवि बना पाया होगा।

चुनौतियाँ

- तीन से चार वर्ष के बच्चों का घर से बाहर रहने का यह पहला अनुभव होता है, इसलिए वे तनाव में होते हैं। वे कक्षा के माहौल के अभ्यस्त नहीं होते और रोते हैं। कई बच्चों को परिवार का कोई बड़ा सदस्य साथ चाहिए होता है।

- बच्चे स्वाभाविक तौर पर दौड़ना और खेलना ही चाहते हैं, इसलिए एक ही काम को पन्द्रह से बीस मिनट तक करते रहने के अभ्यस्त होने में उन्हें लगभग एक माह का समय लगा। इसे शाला जाने की पूर्व-तैयारी के रूप में देखा जा सकता है।

- विभिन्न आयु समूहों के बच्चों के साथ एक ही कक्षा में एक ही समय पर काम करना मुश्किल होता है, क्योंकि सभी बच्चे उम्र और व्यवहार के तौर पर बिलकुल अलग होते हैं।

- बच्चे नियमित रूप से आँगनवाड़ी नहीं आते, इसलिए हर दिन की शुरुआत पिछली चर्चाओं को दोहराकर करनी पड़ती थी।

- ज़्यादातर बच्चों ने प्राइवेट स्कूलों में दाख़िला ले रखा था, इसलिए वे कुछ समय आँगनवाड़ी आकर फिर स्कूल चले जाते थे। इसे लेकर आँगनवाड़ी कार्यकर्ता के मन में भी चिन्ता थी, क्योंकि आँगनवाड़ी में बच्चों की संख्या लगातार घट रही थी और उनके साथ काम करने के घण्टे भी कम हो गए थे।

नई शिक्षा नीति 2020 में प्राथमिक संरचना के ढाँचे में बदलाव किया गया है। इसमें पहले तीन वर्ष (3-6 आयु) पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं और बाद के दो वर्ष (6-8) कक्षा 1 व 2 के लिए हैं। प्राइवेट स्कूलों में तो नर्सरी, केजी-1 और केजी-2 की कक्षाएँ अलग-अलग लगती हैं,

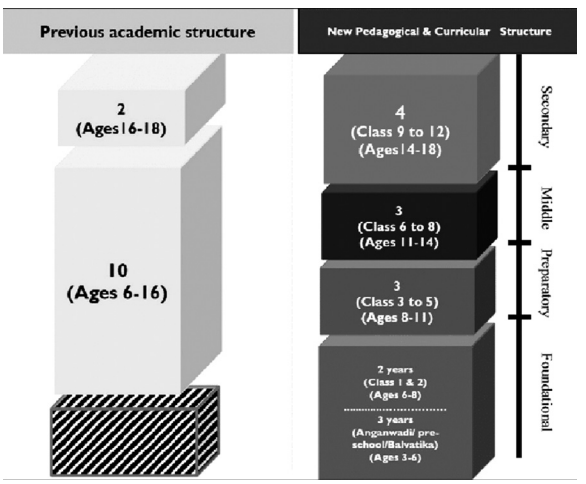

चित्र 11

चित्र 11

लेकिन आँगनवाड़ी या सरकारी पूर्व-प्राथमिक शालाओं में अभी एक ही शिक्षक की व्यवस्था है। ज़ाहिर है कि अधिकांश पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में तीन से छह वर्ष की आयु के बच्चे एक साथ बैठ रहे होंगे। उनके साथ इस तरह किसी एक थीम पर ऐसी 'स्तरानुकूल' गतिविधियाँ करवाना उचित रहेगा, जिनमें सभी आयु वर्ग के बच्चों के लिए पर्याप्त मौक़े हों। इस तरह बच्चों के परिचित परिवेश से विषय लेकर बेहद कम सामग्री या स्थानीय स्तर पर चित्र कार्ड, पोस्टर, आदि बनाकर उनका उपयोग किया जा सकता है।

यह लेख अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम करते हुए मध्य प्रदेश सरकार व महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के लिए वर्ष 2021-22 में ईसीई (शाला पूर्व शिक्षा - शिक्षण मार्गदर्शिका - थीम-आधारित पाठ्यक्रम) पाठ्यचर्या निर्माण व उसकी पायलट प्रक्रिया के दौरान हुए अनुभवों पर आधारित है।

हाथ के एक्स-रे का चित्र - इंटरनेट से साभार
पायलट प्रक्रिया के सभी चित्र - पारुल

सन्दर्भ

1. *पूर्व-प्राथमिक पाठ्यचर्या*, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
2. *प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा*, मध्य प्रदेश
3. एनसीएफ फॉर फ़ाउण्डेशनल स्टेज 2022, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

पारुल बत्रा दुग्गल पिछले दस वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन भोपाल में काम कर रही हैं, और फ़िलहाल सरकारी स्कूल के शिक्षकों और बच्चों के साथ शुरुआती पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं को समझने में जुटी हैं। बच्चों के लिए कई किताबें प्रकाशित। बाल साहित्य और बच्चे कैसे सीखते हैं, में गहरी दिलचस्पी है।
सम्पर्क : parul.duggal@azimpremjifoundation.org